पाठ 5: नागार्जुन (यह दंतुरित मुसकान, फसल)

पाठ का सार (Summary):

यह दंतुरित मुसकान: इस कविता में कवि ने एक छोटे शिशु (जिसके अभी-अभी नए दाँत निकलने शुरू हुए हैं) की निश्छल और प्यारी मुसकान का मनमोहक वर्णन किया है। यह मुसकान इतनी शक्तिशाली है कि यह मरे हुए (निराश) मनुष्य में भी जान डाल सकती है।

फसल: इस कविता में बताया गया है कि फसल किसी एक व्यक्ति के परिश्रम का फल नहीं है। फसल नदियों के पानी का जादू, लाखों किसानों की मेहनत, अनेक प्रकार की मिट्टी के गुणधर्म, सूरज की किरणों के प्रभाव और हवा की थिरकन का सामूहिक परिणाम है।

प्रश्न-अभ्यास: 'यह दंतुरित मुसकान' (NCERT Solutions)

प्रश्न 1. बच्चे की दंतुरित मुसकान का कवि के मन पर क्या प्रभाव पड़ता है?

बच्चे की दंतुरित (नए निकले दाँतों वाली) मुसकान देखकर कवि का मन अपार खुशी और वात्सल्य से भर जाता है। कवि को ऐसा लगता है जैसे बच्चे की यह मुसकान किसी मरे हुए मनुष्य (यानी अत्यंत निराश व्यक्ति) के शरीर में भी प्राण (जान) डाल सकती है। बच्चे का धूल से सना हुआ शरीर देखकर उन्हें लगता है जैसे कमल का फूल तालाब छोड़कर उनकी झोपड़ी में खिल गया हो। पत्थर दिल मनुष्य भी इस मुसकान को देखकर पिघल जाए।

प्रश्न 2. बच्चे की मुसकान और एक बड़े व्यक्ति की मुसकान में क्या अंतर है?

बच्चे की मुसकान और बड़े व्यक्ति की मुसकान में निम्नलिखित अंतर होता है:

1. बच्चे की मुसकान में निश्छलता, मासूमियत और भोलापन होता है। उसमें कोई स्वार्थ या बनावट नहीं होती।

2. बड़ों की मुसकान अक्सर बनावटी, स्वार्थ से भरी या परिस्थितियों के अनुसार होती है।

3. बच्चे की मुसकान दिल जीत लेती है और हर किसी को अपनी ओर आकर्षित करती है, जबकि बड़ों की मुसकान में हमेशा ऐसा आकर्षण नहीं होता।

प्रश्न 3. **कवि ने बच्चे की मुसकान के सौंदर्य को किन-किन बिंबों के माध्यम से व्यक्त किया है?**

कवि ने बच्चे की मुसकान के सौंदर्य को व्यक्त करने के लिए निम्नलिखित बिंबों (Images) का प्रयोग किया है:

1. **प्राण डालने वाला बिंब:** "मृतक में भी डाल देगी जान" - मुसकान इतनी सजीव है कि निराश व्यक्ति भी उत्साहित हो उठे।

2. **कमल का बिंब:** "छोड़कर तालाब मेरी झोपड़ी में खिल रहे जलजात" - धूल से सने बच्चे को देखकर लगता है जैसे कमल तालाब की जगह उनकी झोपड़ी में खिल गया हो।

3. **शेफालिका के फूल का बिंब:** शिशु के स्पर्श से बबूल या बाँस जैसे कठोर पेड़ से भी शेफालिका के फूल झड़ने लगते हैं।

4. **पाषाण (पत्थर) का पिघलना:** शिशु की मुसकान देखकर कठोर पत्थर भी पिघलकर जल बन जाए।

प्रश्न 4. **भाव स्पष्ट कीजिए-**
(क) छोड़कर तालाब मेरी झोपड़ी में खिल रहे जलजात।
(ख) छू गया तुमसे कि झरने लग पड़े शेफालिका के फूल बाँस था कि बबूल?

(क) भाव: जब कवि छोटे बच्चे के धूल से सने हुए सुंदर शरीर और मुसकान को देखता है, तो उसे ऐसा प्रतीत होता है कि कमल (जलजात) अपना तालाब छोड़कर स्वयं उसकी गरीब झोपड़ी में आकर खिल गया है। बच्चा कमल के फूल जितना ही कोमल और पवित्र है।

(ख) भाव: बच्चे का स्पर्श (छूना) इतना जादुई और सुखद है कि उसे छूते ही कठोर बाँस या बबूल के पेड़ (कठोर और नीरस हृदय वाले मनुष्य) से भी कोमल और सुंदर शेफालिका के फूल झड़ने लगते हैं। अर्थात् शिशु की मुसकान कठोर से कठोर व्यक्ति को भी कोमल और भावुक बना देती है।

प्रश्न-अभ्यास: 'फसल' (NCERT Solutions)

प्रश्न 1. **कवि के अनुसार फसल क्या है?**

कवि के अनुसार, फसल कोई अपने-आप पैदा होने वाली वस्तु नहीं है। फसल वास्तव में नदियों के पानी का जादू है, लाखों-करोड़ों किसानों के हाथों की मेहनत (श्रम) का परिणाम है, विभिन्न प्रकार की मिट्टी के गुणधर्मों का मिला-जुला रूप है, सूरज की किरणों का परिवर्तित रूप है, और हवा की थिरकन (हवा के झोंकों) का सिमटा हुआ रूप है। इन सभी के सम्मिलित प्रभाव से ही फसल का निर्माण होता है।

प्रश्न 2. **कविता में फसल उपजाने के लिए आवश्यक तत्त्वों की बात कही गई है। वे आवश्यक तत्त्व कौन-कौन से हैं?**

कविता में फसल उपजाने के लिए निम्नलिखित आवश्यक तत्त्वों की बात कही गई है:

1. **पानी:** अनेक नदियों का जल, जो मिट्टी को नम और उपजाऊ बनाता है।
2. **मनुष्य का श्रम:** लाखों-करोड़ों किसानों और मज़दूरों के हाथों की मेहनत।
3. **मिट्टी:** भूरी, काली, संदली अनेक प्रकार की मिट्टी का स्वभाव और उसके खनिज तत्त्व।
4. **सूरज की किरणें:** जिनसे पौधों को ऊष्मा और ऊर्जा (प्रकाश संश्लेषण) प्राप्त होती है।
5. **हवा:** हवा की थिरकन जो फसल को लहराने और पकने में मदद करती है।

प्रश्न 3. **फसल को 'हाथों के स्पर्श की गरिमा' और 'महिमा' कहकर कवि क्या व्यक्त करना चाहता है?**

फसल को 'हाथों के स्पर्श की गरिमा और महिमा' कहकर कवि किसानों के कठोर परिश्रम को सम्मान दे रहा है। कवि व्यक्त करना चाहता है कि बिना किसान की मेहनत और उसके हाथों के स्पर्श के प्रकृति के बाकी तत्त्व (पानी, हवा, धूप, मिट्टी) अकेले फसल उगाने में सक्षम नहीं हैं। किसानों के पसीने और मेहनत के कारण ही बीज एक लहलहाती फसल का रूप ले पाते हैं। इसलिए यह किसानों के हाथों का गौरव (गरिमा) है।

प्रश्न 4. **भाव स्पष्ट कीजिए- 'रूपांतर है सूरज की किरणों का सिमटा हुआ संकोच है हवा की थिरकन का!'**

भाव: इन पंक्तियों का भाव यह है कि पौधों का भोजन बनाना और उनका विकास सूरज की किरणों के बिना असंभव है। फसल सूरज की किरणों की ऊष्मा और ऊर्जा का ही परिवर्तित रूप (रूपांतर) है। इसके अलावा, फसल हवा के बहाव (थिरकन) को अपने भीतर समेटकर ही बड़ी होती है। हवा और धूप दोनों के सहयोग से ही फसल लहलहाती है।